Original Article
ISSN(Online):2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July to December 20234(2),1675–1679

ECOLOGICAL AWARENESS IN THE 21ST CENTURY HINDI STORIES

Dr. A.K Bindhu[1]

[1]Associate Professor, Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology, Kerala

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2810

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

20% of the population of developed countries consumes 80% of the earth's resources and 80% of the rest of the world lives on 20% of the resources. The more resources are consumed, the more pollution will spread. To produce industrial products, man has started exploiting nature and creating a new culture by separating from it. Environmental destruction is its dangerous consequence. When the exploitation of nature started questioning the existence of humans, its response started reflecting through literature. The capitalist mentality that takes away the right to live by unfairly exploiting nature is visible in the literature of the twenty-first century. A culture moving towards development versus destruction shows the decline of the entire human race. The stories of the twenty-first century draw our attention to this horrific reality. Mangosil is proof of this

Keywords: Twenty-First Century, Ecological Awareness, Environmental Crisis, Pollution,Multi- National Companies,Worldwar, Indus Valley Civilization,Narmada Movement, Flood, Sunami, Destruction, Cultural Decline, Capitalism, Socialism, Resistance, Mangosil

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी में पारिस्थितिक अवबोध

डॉ. ए. के. बिन्दु
असोसिएट प्रोफसर
हिन्दी विभाग
कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, केरल

1. भूमिका

विकसित देशों की बीस प्रतिशत जनता पृथ्वी के अस्सी प्रतिशत संसाधनों का उपभोग करती है और शेष विश्व की अस्सी प्रतिशत जनता बीस प्रतिशत संसाधनों पर गुज़ारा करती है। संसाधनों का जितना अधिक उपभोग होगा उतना प्रदूषण फैलेगा। औद्योगिक उपजों की निर्मिति केलिए मनुष्य प्रकृति का शोषण करके उससे अलग होकर नवीन संस्कृति का निर्माण करने लगा है। पर्यावरण विनाश इसकी खतरनाक परिणति है। प्रकृति का शोषण मानव के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाने लगा तो उसकी प्रतिक्रिया साहित्य के माध्यम से होने लगी। प्रकृति का अनुचित शोषण करके जीने के अधिकार को छीननेवाली पूंजीवादी मानसिकता का पर्दाफाश इक्कीसवीं सदी के साहित्य में नज़र आता है। विकास बनाम विनाश की ओर जानेवाली संस्कृति सम्पूर्ण मानव राशी का पतन दर्शाता है। इक्कीसवीं सदी की कहानियाँ इस भीषण यथार्थ की और हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। मैंगोसील इसका सबूत है।

मुख्य शब्द

इक्कीसवीं सदी,पारिस्थितिक अवबोध, पर्यावरण संकट,प्रदूषण,मल्टिनेशनल कंपनियाँ,विश्वयुद्ध ,सिंधु घाटी सभ्यता,नर्मदा आंदोलन,बाढ़,सुनामी,विनाश,सांस्कृतिक पतन,पूंजीवाद,समाजवाद ,प्रतिरोध, मैंगोसिल

2. प्रस्तावना

मलयालम के विख्यात कवि एवं ज्ञानपीठ विजेता प्रो. ओ.एन.वी.कुरुप्प ने अपनी कविता 'पृथ्वी के प्रति शोकगीत' में लिखा है-

"अब तक न मरी भूमि!
तेरी आसन्न मृत्यु पर तुझे मिले आत्मशान्ति!
यह तेरी (और मेरी भी) अन्तिम शुश्रूषा के लिए
हृदय में आज ही रचा गया गीत है।
मृत्यु के काले विहँसित विष-पुष्प की छाँव में
कल तेरे निश्चल हो जाने पर
आँसुओं से जलाभिषेक कर विलाप करने के लिए
यहाँ नहीं बचेगा कोई भी, मैं भी!
यह तेरे लिए लिखे डालता मैं!
अभी तक न मरी भूमि!
तेरी आसन्न मृत्यु पर तुझे मिले आत्मशान्ति!"

अनादिकाल से प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध अटूट रहा है। लेकिन औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप पूँजीवादी वर्ग ने प्रकृति को लूटकर अपना उत्पादन बढ़ाना शुरू कर दिया। तबसे प्रकृति और मनुष्य के बीच का सम्बन्ध शिथिल होने लगा और पारिस्थितिक विनाश मनुष्य के विनाश का हेतु बन गया। इसके कारण आज विश्व में पर्यावरण संकट, पर्यावरण अवकर्षण, जल, वायु, भूमि, रेडियोधर्मिता, ओज़ोन परत में छिद्र, तापमान में वृद्धि आदि तथ्यों पर निरंतर विचार-विमर्श होने लगा है। विश्व के वैज्ञानिक, राजनीतिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री आदि सभी पारिस्थितिक संकट के भयंकर परिणामों के प्रति चेतावनी दे रहे हैं। प्रसिद्ध पर्यावरणविद और इकॉलजी पत्रिका के सम्पादक एडवर्ड गोल्डस्मिथ ने कहा- "धरती पर तीसरा विश्वयुद्ध आरम्भ हो चुका है। यह युद्ध प्रकृति के खिलाफ है। आज हम वनस्पति जगत् की मृत्यु देख रहे हैं। अफ्रिका तो अब मृत्यु के निकट है। लेकिन अब यही युद्ध भारत, श्रीलंका, दक्षिण एशिया और दक्षिण अमेरिका में चल रहा है। यहाँ विस्तृत मैदान रेगिस्तान में बदल रहे हैं।"सन् 1972 के स्टोक होम सम्मेलन के बाद विश्व में पर्यावरण प्रदूषण के भयंकर परिणामों के प्रति जागरूकता आई है। नर्मदा आन्दोलन, मुल्लपेरियार, सुनामी ,बाढ़आदि हमें प्रकृति को बचाए रखने का आह्वान दे रहे हैं।

3. इक्कीसवीं सदी के कहानिकारों की पारिस्थितिक चिंता

इक्कीसवीं सदी का समय और समाज चहुमुखी संक्रमण झेल रहा है। स्त्री, दलित, परिस्थिति, आदिवासी, क़ीर समाज,किसान,बालक,वृद्ध आदि की समस्याओं को साहित्य में स्थान मिला है। पर्यावरण संकट मुख्यतः जैववैविध्यों तथा सामाजिक संकट के रूप में दृश्यमान है। इस सदी के कहानीकारों में पारिस्थितिक चिन्ता कई रूपों में प्रकट हुई है। एक ओर विकास के फलस्वरूप सर्वत्र उग आई मल्टिनेशनल कम्पनियों से उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण है तो कहीं खो जाने वाली संस्कृति की पीड़ा है। कहीं-कहीं काट दिए जाने वाले पेड़-पौधों के बारे में चिन्तित है तो वे कहीं सत्यानाश के कगार तक पहुँचे हुए जानवरों से निकलनेवाले काले धुएँ में घुटनेवाले मनुष्य को विषलिप्त पानी एवं कीटनाशकों में सने हुए खाने का उपयोग करना पड़ता है। सहज सन्तुलित वातावरण के स्थान पर कृत्रिमता आ गई। राजेश जोशी के 'कपिल का पेड़, 'हवा', 'पानी', 'परिन्दा कुछ नहीं', मधु कांकरिया का 'बदबू', कैलाश वनवासी का 'रोज़ का एक दिन', मृदुला गर्ग का 'इक्कीसवीं सदी का पेड़', स्वयंप्रकाश का 'बली', संजीव का 'आरोहण', 'अमरकांत'का 'जले हुए शहर' आदि पारिस्थितिक सजगताकीसशक्त कहानियाँ हैं।

सन् 2006 में प्रकाशित उदयप्रकाश की लम्बी कहानी है 'मैंगोसिल'। यह उत्तरआधुनिक खतरनाक विकासजन्य विनाश की ओर संकेत करने वाली रूपक कहानी है। उदयप्रकाश की कहानियाँ एक कठिन समय का साक्षात्कार हैं। कथा साहित्य के परम्परागत पाठ को उन्होंने अपने आख्यान और कल्पनात्मक विन्यास से पूरी तरह बदल दिया है। सभ्यता के नाम पर संहारात्मक प्रगति का नाम मैंगोसिल है। कहानी तेरह उपशीर्षकों में बँटी हुई है, जिससे उसका पूरा चित्र उभरकर सामने आता है। मैंगोसिल एक विचित्र रोग है और गरीब देशों के बच्चे ऐसे बीमारी से पीड़ित हैं। सिर का अननुपातिक ढंग से बड़ा होना ही इसका अर्थ है। कहानी का बच्चा सूरी (सूर्यकान्त) के मैंगोसिल किसी भी देश के असन्तुलित विकास का प्रतीक है। डॉक्टरों की आशंकाओं को झुठलाकर आठ साल जीने के चौतरफा उपेक्षा से आहत होकर वह आत्महत्या कर लेता है। भारत जैसे विकासशील देशों में हर बच्चा अपने ऊपर बोझ ढोते ही जन्म लेता है। केरल के कासरगोड जिले में कितने ऐसे बच्चे हैं। अंबिकासुतन माङ्ङाड़ ने अपने उपन्यास 'एनमकजे' में इसका मार्मिक चित्रण किया है।

4. पारिस्थितिक असंतुलन से उत्पन्न खतरनाक परिस्थिति

मैंगोसिल के रूपक के बहाने लेखक ने एक ओर वैश्वीकरण में पारिस्थितिक असन्तुलन तथा दूसरी ओर उत्तसे उत्पन्न खतरनाक परिस्थितिजन्य विषमताओं पर प्रकाश डाला है। मोटेसिरका बोझ जिस प्रकार बच्चे के लिए असहनीय बन जाता है, उसी तरह विकास समाज नहीं सह सकता। पर्यावरण सम्बन्धी आधारभूत तत्वों को नष्ट-भ्रष्ट करके विकास के नाम पर होने वाले अत्याचार सबसे खतरनाक है। इस सच्चाई का जिक्र योंदिया है- "पूँजी और सत्ता के हर रोज फैलते साम्राज्य की अभियान्त्रिकी के बुलडोजर्स एक दिन मेट्रोरेल, फ्लाई ओवर, किसी शोपिंग माल, बाँध, खदान, उद्योग या किसी पाँच-सात सितारा होटल के रूप में उस मलिन बस्ती में भी पहुँचते हैं।" इसमें विकास के भूमंडलीय आयामों की विकृति का उद्घाटन है। विकास के नाम पर होने वाले लाखों गरीबों की बस्तियों और झोंपड़ियों को एकाध घण्टे में विनाश घोर सांस्कृतिक पतन का कारण बन जाता है। नगरों का अनावश्यक सौन्दर्यकीकरण प्राकृतिक असन्तुलन का बीज बोता है।

मानव सभ्यता के विकास की कहानी नदियों से जुड़ी हुई है। सिंधु घाटी की सभ्यता से लेकर सुमेरिया, बेबिलोनिया और मिश्र की प्राचीन सभ्यताएँ इसका प्रमाण हैं। अनियन्त्रित शहरीकरण एवं औद्योगीकरण से उत्पन्न परिस्थितियों ने पर्यावरण पर चोट की है। विकास के चक्कर में आज नदियाँ अप्रत्यक्ष हो रही हैं। सांस्कृतिक मूल्य नष्ट हो रहे हैं। कहानीकार इस भीषण यथार्थ को उसकी तीव्रता के साथ हमारे सम्मुख रखता है- "सन् दो हज़ार तीन में अफगानिस्तान, इराक, बेस्निया में जो हुआ या बीसवीं सदी के मध्य में हिरोशिमा-नागासाकी, कोरिया-वियतनाम में जो हुआ... क्या वह नर्मदा, कृष्णा, कावेरी, आमजॉन, बोल्गा, थेम्स, सिंधु, गंगा, तुंगभद्रा आदि तमाम नदियों की घाटी और तटों पर जो हो रहा है, उससे भिन्न है?" विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करना पारिस्थितिक सन्तुलन के लिए खतरनाक है।

5. पर्यावरण प्रदूषण का भयानक रूप

वैश्वीकरण में बिगड़े पारिस्थितिक सन्तुलन का दूसरा रूप उदयप्रकाश ने 'जहाँगीरपुरी' में दिखाया है। चन्द्रकान्त थोराट से डॉक्टरों का कथन इसको जाहिर करता है- "यह कोई न्यूरोलॉजिकल डिस्ऑर्डर भी हो सकता है, और कोई वायरल या बयोजनेटिक प्रभाव या किसी खास प्रदूषण या पोयज़नस असर कि उसके सिर की कोशिकाओं का विकास इसके शेष शरीर के मुकाबले अधिक तेजी से हो रहा है।" सूरी का जन्म जहाँगीर पुरी की गली नम्बर सात में हुआ था। गली का वर्णन यों दिया है-"पानी और दलदल के बीच में से उभरता हुआ। राजमार्ग और इस इलाके के बीच के फासले पर फैला हुआ गहरे स्याह गंगा का कीचड़, मिट्टी-पानी में बना नहीं लगता। मोबिल, ग्रीस, तेल और प्लास्टिक के खोज के बाले गाढ़े द्रव से बना कोई रासायनिक मिश्रण लगता है। इसमें सड़े हुए फलों-सब्जियों का कार्बन भी होगा। प्रदूषित पर्यावरण के इस गली में सूरी का मैंगोसिल क्या अतिरंजित है? दिल्ली जैसे विकासशील देश में अविकसित बस्तियाँ पारिस्थितिक असन्तुलन का शिकार बन रही हैं। गरीबी पारिस्थितिक विनाश का जड़ है। इसका असर गरीबों, खासकर बच्चों पर पड़ता है। सूरी कहता है- "मैंगोसिल नाम का यह रोग जिस वायरस से होता है, मालूम है उस वायरस का नाम क्या है? गरीबी ।" जहाँगीरपुरी की गलियाँ और वहाँ के नाले अनेक मारक रोगों को जन्म देती हैं।

संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक हर साल 20 लाख से भी अधिक मौतें और करोड़ों लोगों में होने वाली बीमारियाँ जल प्रदूषण के कारण होती हैं। इन गलियों में पानी की निकासी के लिए जो नालियाँ बनाई गई हैं, वे ऊपर से खुली हैं। जैसे- "सुबह-सुबह बच्चे और बीमार या बूढ़े लोग इन्हीं नालियों के ऊपर बैठकर निपटते हैं। पानी रुक जाने पर इन नालियों से उठनेवाली गंध इस बत्ती का खास पहचान देती है।" नालियों के मच्छर और कीटाणु बच्चों को बीमार कर देते हैं। प्रदूषण का भयावह रूप यहाँ देखा जा सकता है। इसकी भीषणता पर कहानीकार ने बार-बार जिक्र किया है। "डब्ल्यु एच.ओ. के सर्वेक्षण की एक रिपोर्ट के अनुसार तीसरी दुनिया के करीब देशों के कितने करोड़ बच्चे हर रोज़ कुपोषण, गरीबी और गन्दगी के कारण असंख्य जानलेवा बीमारियों के शिकार होते हैं और मर जाते हैं। पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न चिनगारियाँ अनेक बीमारियों को जन्म देकर पारिस्थितिक सन्तुलन की जड़ें काटने लगीं। इस वास्तविकता को नकारना विनाश का बीज बोने में सहायक बन जाता है।

6. प्रकृति और स्त्री की परस्पर पूरकता

प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ी सभी बातें पारिस्थितिक विमर्श के अन्तर्गत समाहित हैं। इससे जुड़कर नारीवाद का एक प्रमुख रूप भी उभरकर आया है-पारिस्थितिक स्त्रीवाद (Eco-Feminism)। स्त्री और प्रकृति को साथ रखकर इसमें विचार, प्रस्तुत किया है। मैंगोसिल में शोभा प्रकृति का सहज अवतार है। शोभा के साथ दारोगा, बिल्डर (जो पूँजीपति वर्ग के घिनौनेपन का प्रतिनिधित्व करता है) रमाकान्त जैसे निकृष्ट लोगों का जो अत्याचार हुआ, यह मूलतः प्रकृति के साथ आदमी के व्यवहार का लेखा-जोखा है। शोभा का पहला पति रमाकान्त एक अनारी किस्म का पुरुष है, जो पैसे के लिए शोभा को इतने सारे नराधमों के हाथ डाल देता है। प्रकृति रूपी स्त्री का अपमान करने में वह हिचकते नहीं। सब कुछ सहकर भी जीने की ललक उसमें विद्यमान रहती है। इसीलिए इन लोगों द्वारा अप्राकृतिक यौन का शिकार होकर भी चन्द्रकान्त थोराट से परिचय पाते ही उस पर विश्वास जताती है और अपने को बचाने की माँग करती है। यहाँ चन्द्रकान्त शोभा का रक्षक बन जाता है। लेकिन थोराट जैसे लोग विरले हैं, जो विनाशकारी करतूतों के बदले संरक्षक की भूमिका निभाएँ।

पूँजीवाद और समाजवाद दोनों समान रूप से पारिस्थितिक विनाश के हेतु हैं। 'पखेरुओं को घोंसला और अण्डे' उपशीर्षक प्रतीकात्मक है। शोभा सात बार गर्भवती हुई। लेकिन हर बार बच्चा यों तो सही समय के पहले गिर जाता या जन्म के दो-चार महीने बाद किसी बीमारी में मर जाता। उसे लगता किमियानी के ठीक सामने जो नाली है, उसके कीटाणु और मच्छर ही उसके बच्चों को बीमार कर देते हैं। मियानी में अक्सर नमी और कभी-कभी तेज बदबू रहा करती थी। "बरसात के केंचुएँ, कनखजूरें, गोजर,घोंघे और मेंढक उनके कमरे के भीतर आ जाते। जिस प्रकार के कीट गन्दे नाले की शक्तियाँ बन जाती हैं वैसे पूँजीवादी और समाजवादीशक्तियाँ हमारे पर्यावरण को प्रदूषित कर रही हैं।

7. प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा एवं प्रतिरोध

प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग व पर्यावरण प्रदूषण अधिक मात्रा में बढ़ जाए तो इसका परिणाम खतरनाक होगा। प्रकृति में प्रतिरोध की भावना जाग जाएगी। विकास के साथ प्रतिरोध में शोभा ने सूरी को जन्म दिया। असंख्य सूरियों को, जो सूरी के समान अकेले आत्महत्या का रास्ता चुनें। लेकिन पेंटागन के दस्तावेज़ के अनुसार व्यवस्था के लिए वे खतरनाक साबित होंगे और उन पर लगातार निगाह रखने की जरूरत होगी। शोभा को ऐसा लगा कि यह बच्चा शायद दारोगा, बिल्डर, पति रमाांकन्त के निरन्तर अत्याचार से शरीर की प्रतिक्रिया है। उसका कथन है-"सामूहिक हिंसा की वजह से अपने गर्भ में हमेशा के लिए कोई खामी पैदा हो गई हो।" सूरी का चेहरा देखकर उसे ऐसा लगा कि उसका चेहरा भावहीन रहा आता जैसे वह कपड़े, लकड़ी, पत्थर या किसी मटैले धातु का बना कोई पुतला हो। यह बिल्कुल निर्जीव है। दूसरे पुत्र के जन्म के समय प्रकृति के इस चमत्कार पर शोभा को आश्चर्य भी हो जाता है। यहाँ कहानीकार शोभा के भिन्न-भिन्न मनोभावों को प्रकृति के चमत्कार के साथ जोड़ता है। प्रकृति और शोभा एक दूसरे का पूरक हैं।

कहानी के अन्त में लेखक ने सूरी के मुँह से हमारे पारिस्थितिक संसाधनों की सुरक्षा के बारे में बताया है। सड़क एक्सिडेंट के बारे में जब चन्द्रकान्त ने सूरी से कहा तो उसने पेड़ के साथ टकरानेवाले ट्रक को देखा। पेड़ का तना कई जगह से छिल गया था। बहुत देर तक चुप रहने के बाद सूरी ने कहा- "पेड़ तो हमेशा चुप खड़ा रहता है,

अपनी ही जगह पर। मुझे लगता है अगर वह किसी से लड़ता भी होगा, वैसे वह पेड़ उस ट्रक से लड़ा, तो सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए।" पेड़-पौधे अपनी जगह पर सुरक्षित हैं। लेकिन स्वार्थी मानव उस पर हमला करे तो कैसे वह चुपचाप खड़े हो जाएँ? अपनी जान बचाने के लिए उसे लड़ना है। यहाँ ट्रक पूँजीवादी शक्तियों का प्रतीक है। इसके खिलाफ पेड़ की प्रतिक्रिया अत्यन्त आवश्यक है।

8. निष्कर्ष

आज के औद्योगिक युग में मानव प्रकृति का दोहन कर सुख-सुविधाएँ जुटाना चाहता है, किन्तु उसका यह प्रयास खुद उसके अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। 'मैंगोसिल' के दौरान कहानीकार यह चेतावनी देता है कि आज के बढ़नेवाले शहरीकरण में पर्यावरण असन्तुलित और असुरक्षित होता जा रहा है। यदि पर्यावरणीय समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो आनेवाली पीढ़ियों को हम केवल बाढ़, सूखा, महामारी जैसी समस्याओं के साथ रिक्त प्राकृतिक संसाधनों का ही उपहार दे सकेंगे। अमर के पुस्तक के पन्ने पर सूरी ने जो लिखा है, दरअसल इस भीषण यथार्थ की ओर इशारा करता है- "मैंने अभी जो ये झोंपड़ी, पेड़, डूबता सूरज और झील बनाई है यही मेरा आखिरी चित्र है।" आज मिट रहे प्राकृतिक संसाधन केवल स्मृतियों या तस्वीरों पर शेष रह जाते हैं। सूरी की आत्महत्या इस विखंडित परिस्थिति से पलायन है। हम सब इसके लिए उत्तरदायी हैं। अगर हम इस परिस्थिति में पलीना लगाएँगे तो विस्फोट हमारी संस्कृति में होगा, जो सब कुछ तहस-नहस कर डालेगा। परिस्थिति की सुरक्षा हमारी और आगामी पीढ़ियों की सुरक्षा है। ऐसा न करें तो अनेक सूरियों का जन्म आगे भी होगा।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

9. संदर्भ:-

1.मैंगोसिल, उदय प्रकाश
2.वाक, सं. सुधीश पचौरी
3.हस्तिवसुंधरा, डॉ. मोहना नारेंग्र सिंह
4.कथयुंपरिस्थितियुम्, जी. मधुसूदनन
5.साहित्यकापारिस्थितिकदर्शन, डॉ.के. वनजा
6.धरतीकी पुकार, सुन्दरलाल बहुगुणा